

21⁶
18

पञ्चमी कर्म कादि में प्रीति हुई। वाद्य (प्रभृति)
काद्यैकवला इया। प्राणिकीयक को वा. प्रसना
वाए सुखाई विवेकात्मा विवेकात्मा ही पापक
विमेय गाना है कि विवाहिके का सजायीक
प्रोका व राजाएव विवाह की प्रेरणाएविके
बकारथे करते। पञ्चमी कर्मका सुखाए हीकर
गन्धर्व ही काय ही मया वाए नकमीन मेय
गण्डारही। मीमात्र वाए ही।

द्वप